Social Science

डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान प्रणाली: सोशल मीडिया पर विश्वसनीयता, चुनौतियाँ एवं शैक्षिक संभावनाएँ

राजश्री पुरसेठ

सहायक प्राध्यापक, मौलाना आजाद शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Correspondence Author: राजश्री पुरसेठ

Received 1 Apr 2026; Accepted 12 May 2026; Published 29 May 2026

DOI: https://doi.org/10.64171/JSRD.5.S3.13-19

सारांश

वर्तमान डिजिटल परिप्रेक्ष्य में सोशल मीडिया ज्ञान-विनिमय, विचार-संप्रेषण और सांस्कृतिक संवाद का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है, जिसके द्वारा भारतीय ज्ञान प्रणाली में निहित प्राचीन दर्शन, पारंपरिक विज्ञान, लोकज्ञान, आयुर्वेद, योग तथा प्रकृति-आधारित जीवन दृष्टि व्यापक जनसमूह तक पहुँच रही है। इस अध्ययन का उद्देश्य सोशल मीडिया पर उपलब्ध भारतीय ज्ञान प्रणाली -संबंधित सामग्री की विश्वसनीयता, उससे जुड़ी चुनौतियों तथा उसकी शैक्षिक उपयोगिता का सम्यक् विश्लेषण करना है। यद्यपि सोशल मीडिया ने ज्ञान के लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति प्रदान की है, तथापि अपूर्ण, संदर्भहीन अथवा अप्रमाणित जानकारी का तीव्र प्रसार वास्तविक ज्ञान की अवधारणा को प्रभावित करता है। तथ्य-जांच की कमी, एल्गोरिथ्म-आधारित प्रसार प्रणाली तथा व्यावसायिक दृष्टिकोण से निर्मित सामग्री इस क्षेत्र की प्रमुख चुनौतियाँ हैं, जिनके कारण शिक्षार्थियों के लिए सत्य और असत्य के मध्य भेद करना जटिल हो जाता है। इसके बावजूद, यदि शैक्षणिक संस्थान, विशेषज्ञ एवं शोधकर्ता प्रमाणिक स्रोतों पर आधारित सामग्री का निर्माण एवं प्रसार करें, तो सोशल मीडिया भारतीय ज्ञान प्रणाली के शैक्षिक संवर्धन का प्रभावी साधन सिद्ध हो सकता है, जो संवादात्मक अधिगम, दृश्य-श्रव्य सामग्री तथा वैश्विक स्तर पर ज्ञान-साझाकरण के अवसर प्रदान करता है। निष्कर्षत यह आवश्यक है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली की गरिमा एवं प्रामाणिकता बनाए रखने हेतु डिजिटल नैतिकता, मीडिया साक्षरता तथा अकादमिक सत्यापन की प्रक्रियाओं को सुदृढ़ किया जाए, जिससे सोशल मीडिया विश्वसनीय एवं शिक्षणोपयोगी मंच के रूप में विकसित हो सके।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS), सोशल मीडिया, प्रामाणिकता / तथ्य-जांच, शैक्षिक संभावनाएँ, डिजिटल नैतिकता एवं मीडिया साक्षरता

1. परिचय

डिजिटल युग ने सूचना और ज्ञान के प्रवाह को अभूतपूर्व गति एवं व्यापकता प्रदान की है, जिसके परिणामस्वरूप सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, ट्विटर (वर्तमान एक्स) और टिकटॉक ज्ञान विनिमय, विचार संप्रेषण तथा सांस्कृतिक संवाद के एक प्रमुख एवं प्रभावशाली माध्यम के रूप में उभरे हैं, भारत के संदर्भ में, जहाँ इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 100 करोड़ से अधिक हो चुकी है, इन डिजिटल मंचों ने भारतीय ज्ञान प्रणाली के अंतर्गत आने वाले वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, संगीत कला, शिल्प परंपरा और लोकज्ञान जैसे प्राचीन एवं पारंपरिक ज्ञान तंत्रों को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाने का एक शक्तिशाली सामाजिक सांस्कृतिक माध्यम बना दिया है। नई शिक्षा नीति 2020 ने भी भारतीय ज्ञान प्रणाली को शिक्षण अधिगम की मुख्यधारा में लाने, उसके दस्तावेजीकरण, पुनर्व्याख्या और डिजिटलीकरण के माध्यम से आधुनिक सामाजिक शैक्षिक संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता बढ़ाने पर विशेष बल दिया है, जिसके फलस्वरूप सोशल मीडिया पर इस प्रणाली आधारित सामग्री की मात्रा में तीव्र वृद्धि हुई है, तथापि, साथ साथ इसके विश्वसनीयता, प्रामाणिकता और शैक्षिक उपयोगिता को लेकर गंभीर चुनौतियाँ भी उभरी हैं, क्योंकि अनेक स्थलों पर अपूर्ण, संदर्भहीन, व्यावसायिक दृष्टि से निर्मित या अप्रमाणित जानकारियों के प्रसार से शिक्षार्थियों और सामान्य जन के लिए सत्य और असत्य, वैज्ञानिक आधारित ज्ञान और अधिकल्प आधारित दावों के बीच भेद क्षमता कठिन होती जा रही है। इसी प्रसंग में यह शोधपत्र साहित्य आधारित एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का रहता हुआ, माध्यमिक स्रोतों, उपलब्ध रिपोर्ट्स, सरकारी नीतिगत दस्तावेज़ों, केस स्टडीज तथा विद्वत्जन लिखित साहित्य के आलोक में सोशल मीडिया पर विद्यमान भारतीय ज्ञान प्रणाली संबंधित सामग्री की विश्वसनीयता का मूल्यांकन, उसके साथ जुड़ी संरचनात्मक एवं नैतिक बाधाओं (जैसे एल्गोरिथ्म आधारित प्रसार, तथ्य जाँच की कमी, व्यावसायिकरण और भाषाई डिजिटल विभाजन) की पहचान तथा शैक्षिक संस्थानों, विशेषज्ञों एवं शोध समुदाय द्वारा उपयोग किए जा सकने वाले शैक्षिक उपयोगिता के अवसरों का सम्यक विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, जिसके तहत प्रामाणिक स्रोत आधारित सामग्री निर्माण, डिजिटल नैतिकता, मीडिया साक्षरता और अकादमिक तथ्य सत्यापन की प्रक्रियाओं के माध्यम से सोशल मीडिया को विश्वसनीय, शैक्षिक रूप से उपयोगी एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली के संरक्षण-पुनरुद्धार का एक संवादात्मक मंच बनाने की संभावना पर विचार किया जाता है।

2. भारतीय ज्ञान प्रणाली का वैचारिक आधार

भारतीय ज्ञान प्रणाली का वैचारिक आधार प्राचीन काल से चली आ रही एक समग्र, बहुआयामी ज्ञान परंपरा पर टिका है, जो वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, योग, यथार्थज्ञान और नैतिक दर्शन को एक साथ

सामंजस्यित करती है। इस परंपरा में "एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति" जैसी उक्तियाँ विविध दृष्टिकोणों, भाषाओं और संप्रदायों के सहअस्तित्व को मानकर ज्ञान को बहुध्वनित और संवादात्मक बनाती हैं। चरक सुश्रुत संहिता और भगवद्गीता जैसे ग्रंथ मनुष्य, प्रकृति और चेतना के सामंजस्य पर आधारित समग्र जीवन दृष्टि प्रस्तुत करते हैं, जो पश्चिमी विज्ञान की खंडित, वस्तु केंद्रित पद्धति से भिन्न है। आधुनिक काल में नई शिक्षा नीति 2020 ने बहुभाषी शिक्षा, स्थानीय ज्ञान और वैदिक पारंपरिक ग्रंथों के अनुवाद को शैक्षिक मुख्यधारा में लाने की दिशा दी है। यूट्यूब, फेसबुक आदि सोशल मीडिया ने आयुर्वेद, योग, लोक चिकित्सा और ग्रामीण ज्ञान को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाया है, परंतु अक्सर संदर्भ रहित, ट्रेंड आधारित और व्यावसायिक उद्देश्यों से बने रील्स व पोस्टों के कारण भारतीय ज्ञान प्रणाली की दार्शनिक गहनता, नैतिक आधार और वैज्ञानिक दृढ़ता प्रभावित हो रही है, जिससे उसकी विश्वसनीयता और शैक्षिक मूल्य पर गंभीर प्रश्न उठ रहे हैं।

3. सोशल मीडिया पर भारतीय ज्ञान प्रणाली सामग्री की विश्वसनीयता

सोशल मीडिया पर भारतीय ज्ञान प्रणाली सामग्री की विश्वसनीयता एक महत्वपूर्ण चुनौती है क्योंकि यहाँ फेक न्यूज़ और अप्रमाणिक जानकारी तेज़ी से फैलती है। एल्गोरिथ्म आधारित प्रसार लोकप्रियता को प्राथमिकता देता है, जिससे प्रमाणिकता प्रभावित होती है, वहीं व्यावसायिकरण और प्रचार कई बार शैक्षिक मूल्य को कम कर देते हैं। तथ्य-जाँच की कमी सही और गलत जानकारी में अंतर करना कठिन बना देती है। इस स्थिति में एआई आधारित फैक्ट-चेकिंग, ब्लॉकचेन स्रोत ट्रेसिंग और विश्वविद्यालय प्रमाणन चैनल जैसे उपाय सामग्री की विश्वसनीयता बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं। संक्षेप में, सोशल मीडिया पर भारतीय ज्ञान प्रणाली की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल नैतिकता, मीडिया साक्षरता और अकादमिक सत्यापन आवश्यक हैं।

3.1 प्रामाणिक स्रोतों का मूल्यांकन

सोशल मीडिया पर भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित सामग्री को मूल्यांकित करते समय यह स्पष्ट भेद करना आवश्यक है कि वह प्रमाणिक या संदिग्ध है। प्रथम प्रकार में शैक्षिक सरकारी संस्थानों, जैसे आयुष मंत्रालय, राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद, विश्वविद्यालय संबद्ध शोधकर्ता और विशेषज्ञों द्वारा तैयार ग्रंथ संदर्भित, शोध आधारित और तर्कसंगत सामग्री आती है, जो चिकित्सीय दृष्टिकोण और चेतावनी सूचना के साथ प्रस्तुत की जाती है। द्वितीय प्रकार में व्यक्तिगत ब्लॉगर्स, यूट्यूब चैनल्स, इंस्टाग्राम रील्स और व्यावसायिक ब्रांड पेजों की वाणिज्यिक उद्देश्य से तैयार सामग्री आती है, जिसमें ग्रंथ संदर्भ, वैज्ञानिक निरीक्षण और सावधानियाँ अक्सर अनुपस्थित या न्यून होती हैं। प्यू रिसर्च 2024 के अध्ययन ने दिखाया कि लगभग 65% भारतीय उपयोगकर्ता आयुर्वेद आधारित "प्राकृतिक उपायों" को वैध चिकित्सा सलाह मानकर उपयोग करते हैं, जिससे प्रामाणिक संस्थागत स्रोतों की पहचान और अप्रमाणिक सामग्री से भेद करना शैक्षिक, सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी दृष्टिकोण से अत्यंत आवश्यक सिद्ध होता है।

तालिका 1 के आँकड़े द्वितीयक डेटा के स्रोत पर आधारित हैं, जो शिक्षा मंत्रालय के भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रकोष्ठ ,सोशल मीडिया नियामक नीतियों, तथा द इंडियन एक्सप्रेस (2026) और कोआन एडवाइजरी ग्रुप (2026)) जैसी रिपोर्टों से संकलित किए गए हैं। संक्षेप में, यह तालिका दिखाती है कि विभिन्न प्लेटफ़ॉर्म पर भारतीय ज्ञान प्रणाली सामग्री प्रमाणिक और अप्रमाणिक दोनों रूपों में प्रसारित होती है—जहाँ विश्वविद्यालय प्रकाशन और मंत्रालय की आधिकारिक सामग्री विश्वसनीय है, वहीं व्यक्तिगत ब्लॉग, विज्ञापन और अफवाहें अप्रमाणिकता को बढ़ाती हैं।

तालिका 1: प्रमुख प्लेटफॉर्म पर भारतीय ज्ञान प्रणाली सामग्री का वर्गीकरण

मंच (प्लेटफ़ॉर्म)	प्रमाणिक सामग्री (%)	अप्रमाणिक सामग्री (%)	उदाहरणात्मक परिदृश्य
यूट्यूब	40	60	योग पर आधारित 'आर्ट ऑफ़ लिविंग' बनाम भ्रामक उपचार विधियाँ
इंस्टाग्राम	25	75	आयुष मंत्रालय की आधिकारिक सामग्री बनाम व्यावसायिक विज्ञापन
ट्विटर	35	65	भारतीय ज्ञान प्रणाली संवाद बनाम मिथ्या सूचनाओं से भरे थ्रेड्स
फेसबुक	30	70	आयुर्वेदिक समूहों की चर्चाएँ बनाम अप्रमाणित घरेलू नुस्खे
व्हाट्सएप	20	80	शैक्षिक समूहों की सामग्री बनाम अफवाहों से भरे फॉरवर्ड संदेश
ब्लॉग/वेबसाइट्स	45	55	विश्वविद्यालय प्रकाशन बनाम व्यक्तिगत ब्लॉग लेखन
लिंक्डइन	50	50	शैक्षणिक लेख एवं व्यावसायिक विमर्श बनाम अप्रमाणित प्रचार सामग्री

3.2 तथ्य-जांच की कमी

सोशल मीडिया पर भारतीय ज्ञान प्रणाली -आधारित सामग्री का प्रसार तथ्य-जाँच की कमी से गंभीर समस्या बन गया है। यूट्यूब चैनल, इंस्टाग्राम रील्स और टिकटॉक पर अधिकांश कंटेंट "चमत्कारी उपाय" या "लाजवाब नुस्खे" के रूप में प्रचारित होता है, बिना वैज्ञानिक शोध, क्लिनिकल ट्रायल्स या ग्रंथ-संदर्भों के। कोविड-19 के दौरान गिलोय को "इम्यूनिटी-बूस्टर" बताकर बिना साइड-इफेक्ट्स या सीमाओं के प्रचार इसका प्रमुख उदाहरण है, जबकि अध्ययन केवल नियंत्रित उपयोग को वैध मानते हैं। प्रेस सूचना ब्यूरो फैक्ट-चेक यूनिट ने 9 यूट्यूब चैनल्स (जैसे आपके गुरुजी, 34 लाख सब्सक्राइबर्स) को फेक न्यूज़ फैलाने के लिए फ्लैग किया। फैक्टचेक.ऑर्ग (तथ्य-जाँच संगठन) और अन्य रिपोर्ट्स के अनुसार, 70% भारतीय ज्ञान प्रणाली दावे (आयुर्वेदिक क्लेम्स सहित) असत्यापित या भ्रामक हैं। सोशल मीडिया एल्गोरिदम सनसनीखेज टाइटल्स को प्राथमिकता देते हैं, जिससे वैज्ञानिक व्याख्याएँ पीछे रह जाती हैं। इससे छात्र और जनसामान्य सत्य-असत्य में भ्रमित होते हैं, भारतीय ज्ञान प्रणाली की

दार्शनिक गहराई प्रभावित होती है। नई शिक्षा नीति 2020 के डिजिटल साक्षरता लक्ष्यों को चुनौती देते हुए, यह परंपरा "अस्पष्ट चमत्कारों" तक सीमित हो रही है। समाधान के रूप में एआई फैक्ट-चेकिंग और मीडिया साक्षरता आवश्यक है। .

4. प्रमुख चुनौतियाँ

भारतीय ज्ञान प्रणाली के सोशल मीडिया आधारित प्रसार में अनेक संरचनात्मक, नैतिक और शैक्षिक चुनौतियाँ उभरती हैं, जो न केवल ज्ञान की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता को प्रभावित करती हैं, बल्कि उसके दीर्घकालिक संरक्षण, शैक्षिक समावेशन और सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व को भी गहराई से चुनौती देती हैं।

क. एल्गोरिथ्म प्रेरित पूर्वाग्रह

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म (फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, टिकटॉक आदि) के एल्गोरिथ्म मुख्य रूप से व्यूज, शेयर, लाइक और एंगेजमेंट के आधार पर सामग्री को रैंकिंग देते हैं, जिसके कारण सनसनीखेज, भावनात्मक या भ्रामक दावे वाली भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित सामग्री (जैसे आयुर्वेद या योग संबंधित "चमत्कारी उपाय") वैज्ञानिक, तर्कयुक्त और संदर्भ आधारित विश्लेषणों की तुलना में अधिक दृश्यता और वायरल स्तर प्राप्त कर लेती है; इस प्रकार एल्गोरिथ्म प्रेरित पूर्वाग्रह विश्वसनीय ज्ञान सामग्री को "ईन्फीड" से वंचित करता है और अप्रमाणित, भ्रामक या वाणिज्यिक प्रेरित दावों को ज्ञान मुख्यधारा के रूप में प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे शिक्षार्थियों और सामान्य उपयोगकर्ताओं के लिए सत्य और असत्य, वैज्ञानिक तथ्य और अधिकल्प के बीच भेद करना अत्यंत कठिन हो जाता है।

ख. व्यावसायिकरण

आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, वास्तु और लोक चिकित्सा जैसे भारतीय ज्ञान प्रणाली तत्वों को सोशल मीडिया पर अक्सर हर्बल उत्पाद, ऑनलाइन कोर्स, वर्कशॉप, रीकॉर्ड वीडियो, सदस्यता मॉडल या "प्राकृतिक चमत्कारी उपाय" पैकेज बेचने के उद्देश्य से उपयोग किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी गहरी दार्शनिक, वैज्ञानिक और नैतिक नींव को संक्षिप्त नुस्खा रूप या "क्विक रेमेडी" के रूप में विकृत कर दिया जाता है; भारत के तीव्र विस्तारशील डिजिटल विज्ञापन बाजार (लगभग 50,000 करोड़ रुपये तक, 2026 तक) के साथ साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित उत्पादों और सेवाओं का डिजिटल प्रचार बढ़ा है, जिसमें ज्ञान तत्वों को विपणन उन्मुख माल सामग्री में बदला जा रहा है, जहाँ लाभ उद्देश्य प्रमाणिक शैक्षिक नैतिक उद्देश्य से पहले आता है, जिससे भारतीय ज्ञान प्रणाली की मूल सामाजिक नैतिक उपयोगिता, वैज्ञानिक दृढ़ता और दीर्घस्थायी शैक्षिक भूमिका कमजोर पड़ती है।

ग. सांस्कृतिक विकृति

डिजिटल परिप्रेक्ष्य में पश्चिमी विपणन संस्कृति और फैशन प्रभाव के कारण कई भारतीय ज्ञान तत्व अपने मूल अर्थ से अलग होकर उपभोक्तावादी और छवि केंद्रित रूप में फिर से निर्मित हो रहे हैं; उदाहरण के लिए, योग को केवल शारीरिक फिटनेस, "फिगर मेंटेनन्स" और शरीर छवि केंद्रित अभ्यास के रूप में प्रचारित किया जा रहा है, जबकि उसकी पारंपरिक समग्र संरचना (शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक संयम तथा चेतना विकास) की उपेक्षा हो रही है; इसी प्रकार ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के लोक ज्ञान, गाँव आधारित चिकित्सा प्रथाएँ और सामुदायिक परंपराएँ अक्सर डिजिटल विभाजन के कारण अप्रतिनिधित्वित रहती हैं और जब भी प्रचारित होती हैं, तो अक्सर व्यावसायिक प्रेरित या अंश रूप में, जिससे उनकी नैतिक सामाजिक गहराई कमजोर हो जाती है और उन्हें सांस्कृतिक रूप से "तत्कालिक नुस्खों" की श्रेणी में अवतरित कर दिया जाता है।

घ. भाषाई बाधाएँ और बहुभाषिक असंतुलन

नई शिक्षा नीति 2020 ने बहुभाषिक शिक्षा, मातृभाषा आधारित अधिगम और स्थानीय भाषाओं में ज्ञान डिजिटलीकरण को नीतिगत प्राथमिकता के रूप में प्रस्तावित किया है, परंतु वर्तमान सोशल मीडिया परिसंचरण में अधिकांश गुणवत्तापूर्ण भारतीय ज्ञान प्रणाली संबंधित सामग्री अंग्रेजी या हिंदी में ही सीमित है और क्षेत्रीय भाषाओं (जैसे तमिल, तेलुगु, मराठी, बांग्ला, ओडिया, गुजराती, कन्नड़, मलयालम आदि) में शैक्षिक स्तर, संदर्भ आधारित और समावेशी सामग्री की उपलब्धता न्यून है; इससे भाषाई सांस्कृतिक समानता, स्थानीय ज्ञान प्रणालियों का अकादमिक संरक्षण और उसका शैक्षिक समावेशन दोनों प्रभावित होते हैं, क्योंकि कई भाषा समुदायों के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली उपलब्ध संसाधनों के स्तर पर सीमित होकर रह जाती है, जिससे शैक्षिक अवसर असमानता और सांस्कृतिक असंतुलन गहरा होता है।

ङ. नियामक नीति और स्व नियंत्रण की कमी

सोशल मीडिया पर भारतीय ज्ञान प्रणाली संबंधित चिकित्सीय, वैज्ञानिक या शैक्षिक दावों के लिए भारत में अभी तक कोई स्पष्ट, केंद्रीय और कार्यन्वित नियामक नीतिगत ढाँचा (FDRA आधारित विज्ञापन मानदंड या विश्वविद्यालय अनुदान आयोग / आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी मंत्रालय द्वारा भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित डिजिटल दावों पर नीतिगत दिशानिर्देश) अधिकांशतः अनुपस्थित या अल्प क्रियान्वित है; बहुत से आयुर्वेद उत्पाद पेज, योग कोर्स प्रचारक और ज्योतिष सेवा प्रदाता "बिना साइड इफेक्ट", "100% ठीक" या "किसी भी रोग में कारगर" जैसे अतिरंजित दावे शामिल करते हैं, जिन पर नियमित निगरानी, फैक्ट चेकिंग टैग या स्पष्ट चेतावनी लेबल (इस दावे की वैज्ञानिक वैधता प्रमाणित नहीं) की लगभग अनुपस्थिति होती है; इस प्रकार नियामक नैतिक संरचना की कमी भारतीय ज्ञान प्रणाली को भ्रामक चिकित्सा सलाह, वित्तीय शोषण और व्यावसायिक उन्मुख विकृति के लिए उद्घाटित करती है और उपयोगकर्ताओं के स्वास्थ्य सुरक्षा, ज्ञान अधिकार और शैक्षिक नैतिक विश्वास को गंभीर।

च. मीडिया साक्षरता और तथ्य जाँच कौशल का अभाव

सोशल मीडिया पर भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित सामग्री के प्रति उपयोगकर्ताओं की प्रतिक्रिया में एक प्रमुख चुनौती यह है कि

अधिकांश शिक्षार्थी, युवा जनसमूह और ग्रामीण/अर्ध शहरी क्षेत्रों के उपयोगकर्ताओं में डिजिटल मीडिया साक्षरता, नैतिक चिंतन और तथ्य जाँच कौशल का स्तर अभी तक पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हुआ है; अनेक उपयोगकर्ता यह नहीं जानते कि आयुर्वेद दावे, योग टिप, ज्योतिष सुझाव या लोक उपाय की वैधता को ग्रंथ संदर्भ, शोध पत्र, वैज्ञानिक रिपोर्ट्स या नियमित स्वास्थ्य एजेंसियों के मानकों के आधार पर जाँचा जा सकता है, और वे अक्सर व्यूज की संख्या, शेयर दर, फॉलोअर काउंट या प्रसिद्ध व्यक्ति की सिफारिश को ही ज्ञान की विश्वसनीयता का एकमात्र मापदंड मान लेते हैं, जिससे भ्रामक दावे जानबूझ कर नहीं, बल्कि मीडिया साक्षरता की अनुपस्थिति के कारण सहजता से स्वीकार कर लिए जाते हैं, जो न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य और वित्तीय जोखिम को बढ़ाता है, बल्कि भारतीय ज्ञान प्रणाली को वैज्ञानिक और दार्शनिक आधार से अलग कर अंधविश्वास आधारित ज्ञान श्रेणी में स्थानांतरित करने का मार्ग प्रशस्त करता है।

छ. ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और ज्ञान इतिहास की उपेक्षा

सोशल मीडिया पर भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित सामग्री अक्सर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सामाजिक आर्थिक संदर्भ और ज्ञान इतिहास की उपेक्षा करके वर्तमान केंद्रित, अंश रूप और व्यावहारिक नुस्खा रूप में प्रस्तुत की जाती है; उदाहरण के लिए, किसी आयुर्वेदिक सूत्र, योग सूत्र या ज्योतिष नियम को बिना वैदिक उपनिषद्कालीन पृष्ठभूमि, ग्रंथ परंपरा, सामाजिक उपयोगिता और विचार इतिहास के संक्षिप्त रील, शॉर्ट वीडियो या कैरोसल पोस्ट के रूप में दिखाया जाता है, जिससे उसकी मूल दार्शनिक सामाजिक उपयोगिता खो जाती है और उपयोगकर्ता को लगता है कि यह केवल वर्तमान समस्या का त्वरित नुस्खा है; इस प्रकार ज्ञान इतिहास और सांस्कृतिक संदर्भ की उपेक्षा ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को एक ऐतिहासिक ज्ञान परंपरा के बजाय एक वर्तमान ओरिएंटेड "नुस्खा कलेक्शन" में बदल दिया है, जिससे शैक्षिक दृष्टिकोण से विद्यार्थी उसकी दीर्घ सामाजिक, दार्शनिक और ऐतिहासिक गहराई को समझ पाने में असफल रहते हैं और उसका अध्ययन केवल व्यावहारिक उपयोगिता के स्तर तक सीमित होकर रह जाता है, जो डिजिटल शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली के पुनरगठन, संरक्षण और वैज्ञानिक विकास के लिए एक गंभीर रचनात्मक प्रकृति की चुनौती बनता है।

5. शैक्षिक संभावनाएँ

डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान प्रणाली के लिए सोशल मीडिया एक सशक्त मंच बनकर उभरा है। यह न केवल परंपरागत ज्ञान के प्रसार का माध्यम है, बल्कि शिक्षा की नई संभावनाओं का द्वार भी खोलता है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म छात्रों-शिक्षकों को संवादात्मक, बहुभाषी और वैश्विक जुड़ाव प्रदान करते हैं, जिससे भारतीय दर्शन, योग, आयुर्वेद, साहित्य व लोकज्ञान आधुनिक शैक्षिक संसाधनों के रूप में प्रस्तुत होते हैं। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, यह शिक्षा को सुलभ, सहयोगी और नवाचारपूर्ण बनाता है।

क. ज्ञान का लोकतंत्रीकरण

डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को लोकतंत्रीकृत कर दिया है, जहाँ प्राचीन ग्रंथों जैसे वेद, उपनिषद्, आयुर्वेद और योग जैसी ज्ञान-धाराएँ अब व्यापक जनसमूह तक पहुँच रही हैं। पारंपरिक रूप से ये ज्ञान गुरुकुलों या पुस्तकालयों तक सीमित थे, लेकिन प्लेटफॉर्म्स जैसे यूट्यूब, इंस्टाग्राम और ट्विटर (X) पर मुफ्त वीडियो, रील्स और थ्रेड्स के माध्यम से ये सुलभ हो गए हैं। इससे ग्रामीण और दूरदराज़ के छात्र, जो महँगी कोचिंग या पुस्तकों का खर्च नहीं उठा सकते, भारतीय ज्ञान प्रणाली को सीख सकते हैं। उदाहरणस्वरूप, #भारतीयज्ञानप्रणाली हैशटैग के तहत लाखों व्यूज वाली सामग्री ने शिक्षा को समावेशी बनाया है, जिससे नई शिक्षा नीति 2020 के समावेशी शिक्षा लक्ष्य को बल मिलता है।

ख. संवादात्मक अधिगम

सोशल मीडिया वीडियो, इन्फोग्राफिक्स और इंटरैक्टिव पोस्ट के माध्यम से छात्रों को संवादात्मक और अनुभवात्मक अधिगम का अनूठा अवसर प्रदान करता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के जटिल अवधारणाओं जैसे भगवद्गीता के कर्मयोग या आयुर्वेद की दोष-प्रकृति को एनिमेटेड वीडियो और क्विज़ के ज़रिए सरल बनाया जा सकता है, जहाँ छात्र कमेंट्स या पोल्स में भाग लेकर अपनी समझ को परखते हैं। यह पारंपरिक व्याख्यान-शैली से अलग, सक्रिय सीखने को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए, टिकटॉक-स्टाइल रील्स में योग आसनों की स्टेप-बाय-स्टेप व्याख्या छात्रों को अभ्यास करने के लिए प्रेरित करती है, जिससे अधिगम की गहराई बढ़ती है और भारतीय ज्ञान प्रणाली को जीवंत बनाया जाता है।

आलेख 1: भारतीय ज्ञान प्रणाली और सोशल मीडिया की शैक्षिक संभावनाएँ

ग. बहुभाषी प्रसार

सोशल मीडिया पर हिंदी, तमिल, बंगाली और अन्य भारतीय भाषाओं में भारतीय ज्ञान प्रणाली सामग्री उपलब्ध कराकर क्षेत्रीय छात्रों के लिए शिक्षा अत्यधिक सुलभ हो जाती है। भारत की भाषाई विविधता के कारण अंग्रेज़ी-केंद्रित शिक्षा कई छात्रों से दूर रह जाती है, लेकिन प्लेटफॉर्म्स की बहुभाषी क्षमता (जैसे यूट्यूब के ऑटो-ट्रांसलेशन) से वेदांत या ज्योतिष जैसी भारतीय ज्ञान प्रणाली को स्थानीय बोलियों में अनुवादित किया जा सकता है। इससे ग्रामीण मध्य प्रदेश या पूर्वोत्तर राज्यों के छात्र लाभान्वित होते हैं। नई शिक्षा नीति 2020 की बहुभाषी शिक्षा नीति को मजबूत करते हुए, यह डिजिटल समावेश को बढ़ावा देता है, जहाँ #IKSinHindi जैसे अभियान लाखों पहुँच बनाते हैं।

घ. वैश्विक ज्ञान-साझाकरण

भारतीय दर्शन, योग, आयुर्वेद और लोकज्ञान को सोशल मीडिया के ज़रिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साझा करने से वैश्विक शैक्षिक संवाद को अपार बढ़ावा मिलता है। अमेरिका या यूरोप के छात्र पतंजलि योगसूत्र या चरक संहिता पर आधारित इंस्टाग्राम रील्स देखकर भारतीय ज्ञान प्रणाली से परिचित होते हैं, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है। यूनेस्को की मान्यता प्राप्त भारतीय ज्ञान प्रणाली को #आयुर्वेदविश्वव्यापी या #योगदर्शन जैसे ट्रेंड्स ने करोड़ों व्यूज दिलाए हैं। यह न केवल भारत की सॉफ्ट पावर को मजबूत करता है, बल्कि वैश्विक चुनौतियों जैसे मानसिक स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेदिक समाधान प्रस्तुत करता है, जिससे भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्व पटल पर प्रासंगिक बनती है।

ङ. सहयोगी अधिगम

सोशल मीडिया समूह अध्ययन, नोट्स साझा करने और शैक्षिक चर्चाओं के माध्यम से सहयोगी अधिगम को प्रोत्साहित करता है, जो भारतीय ज्ञान प्रणाली को सामूहिक रूप से समृद्ध बनाता है। व्हाट्सएप ग्रुप्स, फेसबुक कम्युनिटीज या रेडिट थ्रेड्स में छात्र उपनिषदों पर बहस करते हैं, नोट्स अपलोड करते हैं या पीयर-रिव्यू करते हैं। इससे विविध दृष्टिकोण मिलते हैं, जैसे लोककथाओं को आधुनिक संदर्भों से जोड़ना। नई शिक्षा नीति 2020 के सहयोगी शिक्षा मॉडल के अनुरूप, यह डिजिटल टूल्स से शिक्षकों-छात्रों के बीच पुल बनाता है, जिससे भारतीय ज्ञान प्रणाली का सामूहिक संरक्षण और विकास सुनिश्चित होता है।

च. डिजिटल संसाधन निर्माण

शैक्षणिक संस्थान और शोधकर्ता प्रमाणिक स्रोतों जैसे एनसीईआरटी भारतीय ज्ञान प्रणाली मॉड्यूल्स या आईजीएनसीए आर्काइव्स पर आधारित डिजिटल सामग्री तैयार कर सकते हैं, जो सोशल मीडिया पर विश्वसनीय शैक्षिक संसाधन बन जाती है। इंटरैक्टिव ई-बुक्स, AR-आधारित वर्चुअल गुरुकुल या पॉडकास्ट्स बनाकर भारतीय ज्ञान प्रणाली को डिजिटाइज़ किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप, IIT या DU के प्रोजेक्ट्स यूट्यूब चैनलों पर अपलोड होकर लाखों छात्रों तक पहुँचते हैं। यह फेक न्यूज़ से बचाते हुए गुणवत्तापूर्ण सामग्री सुनिश्चित करता है, जो नई शिक्षा नीति 2020 के डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर लक्ष्य को साकार करता है।

डिजिटल युग में सोशल मीडिया भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रसार का प्रभावी माध्यम है। यह शिक्षा को सुलभ, संवादात्मक और वैश्विक बनाता है, परंतु विश्वसनीयता की चुनौती बनी रहती है। प्रमाणिक स्रोतों पर आधारित सामग्री से भारतीय ज्ञान प्रणाली आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिक और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूत पहचान बना सकती है।

6. समाधानात्मक उपाय

डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान प्रणाली की विश्वसनीयता और शैक्षिक उपयोगिता बनाए रखने हेतु ठोस कदम आवश्यक हैं। सोशल मीडिया पर फेक न्यूज़, व्यावसायिकरण और तथ्य-जाँच की कमी जैसी चुनौतियाँ इसके प्रभाव को कमजोर करती हैं। इन समस्याओं का समाधान तकनीकी उपकरणों, शैक्षिक नीतियों और मीडिया साक्षरता के संयोजन से संभव है। यदि संस्थागत प्रमाणन और डिजिटल नैतिकता को सुदृढ़ किया जाए, तो सोशल मीडिया भारतीय ज्ञान प्रणाली के संवर्धन का सशक्त मंच बन सकता है।

क. एआई आधारित तथ्य-जाँच

सोशल मीडिया पर भारतीय ज्ञान प्रणाली से जुड़ी अप्रमाणिक जानकारी को रोकने के लिए एआई-आधारित फैक्ट-चेकिंग टूल्स का व्यापक प्रयोग आवश्यक है। ऑल्ट न्यूज़, गूगल तथ्य-जाँच एक्सप्लोरर या लॉजिकल एआई जैसे प्लेटफॉर्म्स भारतीय संदर्भों में गहनकायी वेरिफिकेशन प्रदान करते हैं, जो वीडियो, इमेज और टेक्स्ट की सत्यता जाँचते हैं। संस्थागत समर्थन से इनका एकीकरण कर भारतीय ज्ञान प्रणाली सामग्री (जैसे आयुर्वेदिक दावे) को प्रमाणित किया जा सकता है, जिससे फेक न्यूज़ कम हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के डिजिटल साक्षरता लक्ष्यों को मजबूत करते हुए, यह छात्रों को विश्वसनीय ज्ञान उपलब्ध कराएगा।

ख. ब्लॉकचेन स्रोत ट्रेसिंग

शैक्षणिक सामग्री के स्रोतों को सुरक्षित रखने और पारदर्शिता सुनिश्चित करने हेतु ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग क्रांतिकारी सिद्ध होगा। यह विकेंद्रीकृत लेजर के माध्यम से डिजिटल सामग्री (जैसे वेद ग्रंथों के डिजिटल संस्करण) का मूल स्रोत ट्रेस करता है, फर्जीवाड़े को असंभव बनाता है। पायथन-डॉकर आधारित प्रोटोटाइप्स में क्यूआर कोड्स से डिग्री/सामग्री वेरिफिकेशन संभव है, जो संसाधन-कुशल है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के संरक्षण में यह अखंडता सुनिश्चित करेगा, जैसा कि शैक्षणिक अखंडता अध्ययनों में सिद्ध हुआ है।

ग. डिजिटल प्रमाणन चैनल

विश्वविद्यालयों और संस्थानों को आधिकारिक डिजिटल चैनल (जैसे यूट्यूब/इंस्टाग्राम वेरिफाइड अकाउंट्स) विकसित करने चाहिए, जहाँ एनसीईआरटी / आईजीएनसीए प्रमाणित भारतीय ज्ञान प्रणाली सामग्री साझा हो। ये चैनल सत्यापित वीडियो, ई-बुक्स और इंटरैक्टिव कंटेंट प्रदान करेंगे, छात्रों को फर्जी स्रोतों से बचाएंगे। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान या दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे संस्थान पहले से ऐसा कर रहे हैं, जिसे स्केल-अप किया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के अनुरूप, यह विश्वसनीय संसाधनों का हब बनेगा।

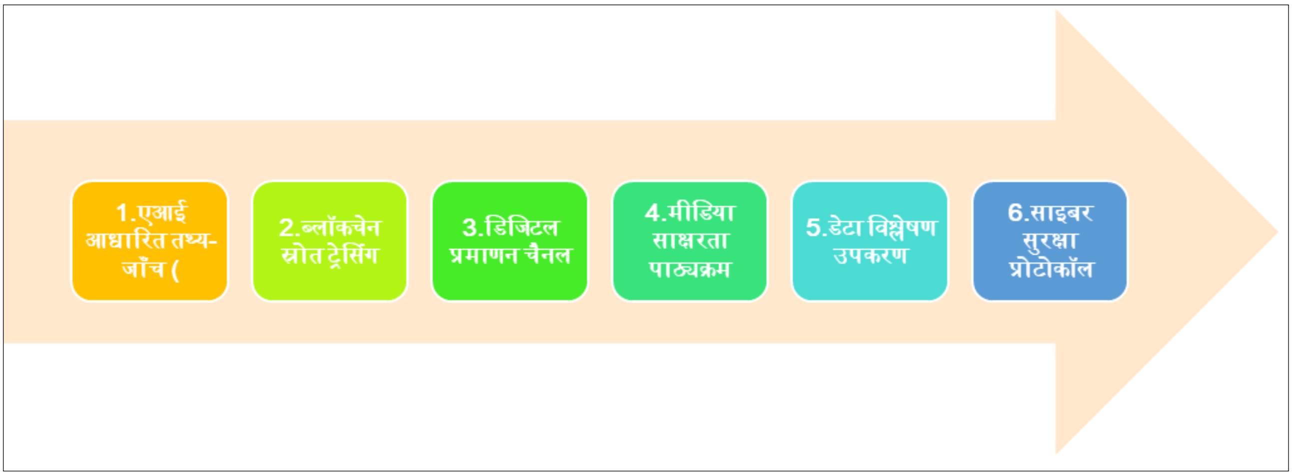

आलेख 2: भारतीय ज्ञान प्रणाली से जुड़ी समाधानात्मक उपाय

घ. मीडिया साक्षरता पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग दिशानिर्देशों के तहत स्कूल-विश्वविद्यालयों में मीडिया साक्षरता कोर्स अनिवार्य हों, जो छात्रों को डिजिटल सामग्री की विश्वसनीयता पहचानना सिखाएँ। इसमें सोशल मीडिया पर भारतीय ज्ञान प्रणाली क्लेम्स (जैसे योग लाभ) की जाँच, बायस पहचान और स्रोत मूल्यांकन शामिल हो। वर्कशॉप्स और ऑनलाइन मॉड्यूल्स से छात्र सक्रिय सत्यापनकर्ता बनेंगे। इससे डिजिटल विभाजन कम होगा और भारतीय ज्ञान प्रणाली का सही प्रसार सुनिश्चित होगा।

ङ. डेटा विश्लेषण उपकरण

सोशल मीडिया पर भारतीय ज्ञान प्रणाली सामग्री की पहुँच, प्रभाव और विश्वसनीयता का आकलन हेतु बिग डेटा एवं मशीन लर्निंग टूल्स (जैसे सोशल लर्निंग एनालिटिक्स) अपनाएँ। ये छात्र व्यवहार, प्रदर्शन पैटर्न और पूर्वानुमान विश्लेषण प्रदान करते हैं, जैसे # भारतीय ज्ञान प्रणाली ट्रेंड्स का प्रभाव मापना। शिक्षा में बिग डेटा से व्यक्तिगत सामग्री अनुकूलन संभव है, जो गोपनीयता चुनौतियों के बावजूद प्रभावी है। शोधकर्ताओं को डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि मिलेगी।

च. साइबर सुरक्षा प्रोटोकॉल

शैक्षणिक प्लेटफॉर्म्स पर भारतीय ज्ञान प्रणाली सामग्री की सुरक्षा हेतु एन्क्रिप्शन, मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन और साइबर मानक अपनाएँ। हैकिंग से बचाव के लिए जनरल डेटा प्रोटेक्शन रेगुलेशन -सदृश प्रोटोकॉल लागू करें, जो डेटा चोरी रोकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सुरक्षित डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र के अनुरूप, यह छात्रों का विश्वास बढ़ाएगा। नियमित ऑडिट्स से प्रणाली मजबूत बनेगी।

तालिका 2: भारतीय ज्ञान प्रणाली से जुड़ी चुनौतियाँ और उनके समाधान

क्रम संख्या	चुनौती	समाधान
1	फेक न्यूज़	एआई आधारित तथ्य-जाँच उपकरणों का उपयोग
2	व्यावसायिकरण	सख्त नियामक नीतियों का निर्माण और पालन
3	डिजिटल विभाजन	ग्रामीण क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड और इंटरनेट विस्तार
4	साइबर सुरक्षा खतरे	एन्क्रिप्शन और बहु-स्तरीय प्रमाणीकरण लागू करना
5	अकादमिक अप्रमाणिकता	ब्लॉकचेन आधारित स्रोत ट्रेसिंग और विश्वविद्यालय प्रमाणन चैनल

7. निष्कर्ष

सोशल मीडिया आज भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रसार का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है। यह मंच परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु बनकर वेदांत, सांख्य, योग, आयुर्वेद, लोककला और प्रकृति-आधारित जीवन दृष्टि जैसी धरोहरों को जन-जन तक पहुँचा रहा है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है तीव्र प्रसार, दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति और संवादात्मक अधिगम, जो शिक्षा को अधिक आकर्षक और सुलभ बनाते हैं।किन्तु इस प्रवाह में सबसे बड़ी चुनौती है,विश्वसनीयता और तथ्य-जांच। अपूर्ण अथवा अप्रमाणित जानकारी आकर्षक रूप में प्रस्तुत होकर तीव्र गति से फैल जाती है। एल्गोरिथ्म आधारित प्रसार प्रणाली लोकप्रियता को प्राथमिकता देती है, सत्य को नहीं, और यही स्थिति शिक्षार्थियों के लिए भ्रम और सत्य के बीच की रेखा को धुंधला कर देती है। यदि इस पर अंकुश न लगाया जाए तो मिथ्या ज्ञान और अंधविश्वास का प्रसार शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है।इसके बावजूद, सोशल मीडिया की शैक्षिक उपयोगिता अत्यंत व्यापक है। यह विद्यार्थियों को स्वतंत्र अधिगम का अवसर देता है, वैश्विक स्तर पर ज्ञान-साझाकरण को संभव बनाता है और नवाचार व रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में इसकी सुलभता शिक्षा को लोकतांत्रिक स्वरूप प्रदान करती है।इस परिदृश्य में मीडिया साक्षरता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्रोत की पहचान, तथ्य-जांच, आलोचनात्मक दृष्टि और डिजिटल नैतिकता का पालन ही वह आधार है, जो सोशल मीडिया को ज्ञान का विश्वसनीय

दीपस्तंभ बना सकता है।अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया, भारतीय ज्ञान प्रणाली, प्रामाणिकता/तथ्य-जांच, शैक्षिक उपयोगिता और मीडिया साक्षरता, ये पाँचों आयाम मिलकर डिजिटल युग में ज्ञान को विश्वसनीय, शिक्षणोपयोगी और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बना सकते हैं। यही वह मार्ग है जो शिक्षा को प्रकाशमान करता है और भारतीय ज्ञान प्रणाली को वैश्विक स्तर पर गरिमा प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. यूनेस्को, मीडिया साक्षरता और डिजिटल नागरिकता: सोशल मीडिया के युग में शिक्षा, यूनेस्को प्रकाशन, पेरिस, 2026।
2. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, उच्च शिक्षा में डिजिटल शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपराएँ, भारत सरकार प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. यूनेस्को, वैश्विक मीडिया एवं सूचना साक्षरता आकलन रूपरेखा, यूनेस्को प्रकाशन, पेरिस, 2024।
4. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, भारतीय ज्ञान प्रणाली और डिजिटल अधिगम पहल, भारत सरकार प्रकाशन, नई दिल्ली, 2024।
5. आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD), डिजिटल शिक्षा परिदृश्य 2023: नवीन शिक्षण पारिस्थितिकी की ओर, OECD प्रकाशन, पेरिस, 2023।
6. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, भारतीय ज्ञान प्रणाली: परंपरा और आधुनिक शिक्षा का समन्वय, भारत सरकार प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023।
7. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी), शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी तथा मीडिया साक्षरता, एनसीईआरटी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022।
8. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेशन हेतु दिशानिर्देश, यूजीसी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021।
9. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,भारत सरकार प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020।
10. कपूर, क., भारतीय ज्ञान प्रणाली: स्वरूप, अवधारणाएँ और अनुप्रयोग, डी. के. प्रिंटवर्ल्ड, नई दिल्ली, 2019।
11. यूनेस्को। मीडिया एवं सूचना साक्षरता: नीति और रणनीति दिशानिर्देश, यूनेस्को प्रकाशन, पेरिस, 2018।
12. सनस्टीन क., सोशल मीडिया के युग में विभाजित लोकतंत्र, प्रिंसटन विश्वविद्यालय प्रेस, प्रिंसटन, 2017।
13. सिंह ब. रा., भारतीय ज्ञान प्रणाली: अवधारणाएँ और अनुप्रयोग, भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, वाराणसी, 2015।
14. शिर्की क., कॉग्निटिव सरप्लस: डिजिटल युग में सृजनात्मकता और सहयोग, पेंगुइन प्रेस, न्यूयॉर्क, 2011।